

रविवार 20 जून, 2021

विषय — क्या ब्रह्मांड, मनुष्य सहित, परमाणु बल द्वारा विकसित है?

स्वर्ण पाठ: नीतिवचन 3: 19

"यहोवा ने पृथ्वी की नेव बुद्धि ही से डाली; और स्वर्ग को समझ ही के द्वारा स्थिर किया।"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 95: 1-6

- 1 आओ हम यहोवा के लिये ऊंचे स्वर से गाएं, अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें!
- 2 हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएँ, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें!
- 3 क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।
- 4 पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं; और पहाड़ों की चोटियां भी उसी की हैं।
- 5 समुद्र उसका है, और उसी ने उसको बनाया, और स्थल भी उसी के हाथ का रचा है॥
- 6 आओ हम झुक कर दण्डवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 148 : 1-5

- 1 याह की स्तुति करो! यहोवा की स्तुति स्वर्ग में से करो, उसकी स्तुति ऊंचे स्थानों में करो!
- 2 हे उसके सब दूतों, उसकी स्तुति करो: हे उसकी सब सेना उसकी स्तुति कर!
- 3 हे सूर्य और चन्द्रमा उसकी स्तुति करो, हे सब ज्योतिमय तारागण उसकी स्तुति करो!
- 4 हे सब से ऊंचे आकाश, और हे आकाश के ऊपर वाले जल, तुम दोनों उसकी स्तुति करो।
- 5 वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसी ने आज़ा दी और ये सिरजे गए।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्टरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. यशायाह 42 : 5-8

- 5 ईश्वर जो आकाश का सृजने और तानने वाला है, जो उपज सहित पृथ्वी का फैलाने वाला और उस पर के लोगों को सांस और उस पर के चलने वालों को आत्मा देने वाला यहावो है, वह यों कहता है:
- 6 मुझ यहोवा ने तुझ को धर्म से बुला लिया है; मैं तेरा हाथ थाम कर तेरी रक्षा करूंगा; मैं तुझे प्रजा के लिये वाचा और जातियों के लिये प्रकाश ठहराऊंगा; कि तू अन्धों की आंखें खोले,
- 7 बंधुओं को बन्दीगृह से निकाले और जो अन्धियारे में बैठे हैं उन को काल कोठरी से निकाले।
- 8 मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा और जो स्तुति मेरे योग्य है वह खुदी हुई मूरतों को न दूंगा।

3. नहेमायाह 9 : 6

- 6 तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन सब से ऊंचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, और समुद्र और जो कुछ उस में है, सभी को तू ही ने बनाया, और सभी की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत करती हैं।

4. मत्ती 11 : 1, 20-30

- 1 जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उन के नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥
- 20 तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्थ के काम किए थे; क्योंकि उन्होंने अपना मन नहीं फिराया था।
- 21 हाय, खुराजीन; हाय, बैतसैदा; जो सामर्थ के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते।
- 22 परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
- 23 और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जाएगा; जो सामर्थ के काम तुझ में किए गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता।

- 24 पर मैं तुम से कहता हूँ, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी।
- 25 उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।
- 26 हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा।
- 27 मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।
- 28 हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
- 29 मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे।
- 30 क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है॥

5. मत्ती 12 : 46-50

- 46 जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तो देखो, उस की माता और भाई बाहर खड़े थे, और उस से बातें करना चाहते थे।
- 47 किसी ने उस से कहा; देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ से बातें करना चाहते हैं।
- 48 यह सुन उस ने कहने वाले को उत्तर दिया; कौन है मेरी माता?
- 49 और कौन है मेरे भाई? और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ा कर कहा; देखो, मेरी माता और मेरे भाई ये हैं।
- 50 क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहिन और माता है॥

6. यिर्मयाह 10 : 10 (वह)-13

- 10 ... यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथ्वी कांपती है, और जाति जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते।
- 11 तुम उन से यह कहना, ये देवता जिन्होंने आकाश और पृथ्वी को नहीं बनाया वे पृथ्वी के ऊपर से और आकाश के नीचे से नष्ट हो जाएंगे।

- 12 उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, उसने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है।
- 13 जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिये बिजली चमकाता, और अपने भण्डार में से पवन चलाता है।

7. प्रकाशित वाक्य 4 : 2 (मैं), 4, 10, 11

- 2 मैं आत्मा में आ गया; और क्या देखता हूं, कि एक सिंहासन स्वर्ग में धरा है, और उस सिंहासन पर कोई बैठा है।
- 4 और उस सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन हैं; और इन सिंहासनों पर चौबीस प्राचीन श्वेत वस्त्र पहिने हुए बैठे हैं, और उन के सिरों पर सोने के मुकुट हैं।
- 10 तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठने वाले के साम्हने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के साम्हने यह कहते हुए डाल देंगे।
- 11 कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही ने सब वस्तुएं सृज्नीं और वे तेरी ही इच्छा से थीं, और सृज्नी गईं॥

8. प्रकाशित वाक्य 14 : 6, 7

- 6 फिर मैं ने एक और स्वर्गदूत को आकाश के बीच में उड़ते हुए देखा जिस के पास पृथ्वी पर के रहने वालों की हर एक जाति, और कुल, और भाषा, और लोगों को सुनाने के लिये सनातन सुसमाचार था।
- 7 और उस ने बड़े शब्द से कहा; परमेश्वर से डरो; और उस की महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुंचा है, और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 583: 20 (से.), 23 (सिद्धांत)-25

रचनाकार। ...सिद्धांत, ईश्वर, जिसने वह सब बनाया था जो स्वयं एक परमाणु या एक तत्व नहीं बना सकता था।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एंड्री ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

2. 295 : 5-15

भगवान मनुष्य सहित ब्रह्मांड का निर्माण और संचालन करता है। ब्रह्मांड आध्यात्मिक विचारों से भरा है, जिसे वह विकसित करता है, और वे मन के आज्ञाकारी हैं जो उन्हें बनाता है। नश्वर मन आध्यात्मिक को भौतिक में बदल देगा, और फिर इस त्रुटि की नश्वरता से बचने के लिए मनुष्य के मूल स्व को पुनर्प्राप्त करेगा। ईश्वर की स्वयं की छवि में बनाए गए नश्वर अमर की तरह नहीं हैं; लेकिन अनंत आत्मा सभी होने के नाते, नश्वर चेतना वैज्ञानिक तथ्य के लिए अंतिम पैदावार होगी और गायब हो जाएगी, और सही, और हमेशा के लिए होने का वास्तविक अर्थ प्रकट होगा।

3. 539 : 19-20, 27-1

यह कहना गलत है कि सत्य और निर्माण में त्रुटि।

यीशु के दिव्य मूल ने उन्हें मानव शक्ति से अधिक सृजन के तथ्यों को उजागर करने के लिए दिया, और एक मन को प्रदर्शित करता है जो मनुष्य और ब्रह्मांड को बनाता है और नियंत्रित करता है। सृष्टि का विज्ञान, यीशु के जन्म में इतना विशिष्ट, उसकी बुद्धिमानी और कम से कम समझ वाली बातों को प्रेरित करता था, और उसके अद्भुत प्रदर्शनों का आधार था।

4. 31 : 4-11

यीशु ने स्वीकार किया कि मांस का कोई संबंध नहीं है। उसने कहा: "पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है।" फिर से उसने पूछा: "कौन है मेरी माता? और कौन है मेरे भाई?" यह समझकर कि यह वे हैं जो अपने पिता की इच्छा को पूरा करते हैं। हमारे पास पिता के नाम से किसी भी आदमी को बुलाने का कोई रिकॉर्ड नहीं है। उन्होंने आत्मा, ईश्वर को एकमात्र निर्माता, और इसलिए सभी के पिता के रूप में मान्यता दी।

5. 507 : 24-6

अनंत मन मानसिक अणु से अनंत तक सभी को बनाता और नियंत्रित करता है। सभी का यह दिव्य सिद्धांत उनकी रचना के दौरान विज्ञान और कला, और मनुष्य और ब्रह्मांड की अमरता को व्यक्त करता है। सृजन हमेशा दिखाई दे रहा है, और हमेशा अपने अटूट स्रोत की प्रकृति से प्रकट होता रहना चाहिए। नश्वर भाव इस प्रकार प्रकट होता है और विचार सामग्री कहता है। इस प्रकार, गलत अर्थ में, दिव्य विचार मानव या भौतिक विश्वास के स्तर तक गिर जाता है, जिसे नश्वर मनुष्य

कहा जाता है। लेकिन बीज अपने आप में है, केवल दिव्य मन ही सब कुछ है और सभी को पुनः उत्पन्न करता है — जैसा कि मन गुणक है, और मन का अनंत विचार, मनुष्य और ब्रह्मांड, उत्पाद है। एक विचार, एक बीज, या एक फूल की एकमात्र बुद्धि या पदार्थ ईश्वर है, जो इसका निर्माता है।

6. 547 : 15-30

मृत्यु दर के अपने इतिहास में, भौतिक आधार से डार्विन के विकास का सिद्धांत अधिकांश सिद्धांतों की तुलना में अधिक सुसंगत है। संक्षेप में, यह डार्विन का सिद्धांत है, — वह मन, मनुष्य सहित ब्रह्मांड को फिर से बनाने के लिए इसके विपरीत, द्रव्य और अंत पदार्थ को उत्पन्न करता है। भौतिक विकास का तात्पर्य है कि महान प्रथम कारण सामग्री बन जाना चाहिए, और बाद में या तो मन में वापस आना चाहिए या धूल और शून्य में नीचे जाना चाहिए।

शास्त्र बहुत पवित्र हैं। हमारा उद्देश्य उन्हें आध्यात्मिक रूप से समझना होगा, केवल इस समझ से सत्य को प्राप्त किया जा सकता है। मनुष्य सहित ब्रह्मांड का सही सिद्धांत भौतिक इतिहास में नहीं बल्कि आध्यात्मिक विकास में है। प्रेरित विचार ब्रह्मांड की एक सामग्री, कामुक, और नश्वर सिद्धांत को त्यागता है, और आध्यात्मिक और अमरता को अपनाता है।

7. 135 : 9-10

आध्यात्मिक विकास अकेले ईश्वरीय शक्ति के व्यायाम के योग्य है।

8. 95 : 30-3

भौतिक भावना अस्तित्व के तथ्यों को प्रकट नहीं करती है; लेकिन आध्यात्मिक भावना मानव चेतना को शाश्वत सत्य में ले जाती है। मानवता धीरे-धीरे पाप की भावना से आध्यात्मिक समझ में आगे बढ़ती है; सब कुछ ठीक से सीखने की अनिच्छा, ईसाईजगत को जंजीरों से बांधती है।

9. 303 : 10-20

जो कुछ भी मन, जीवन, सत्य और प्रेम को दर्शाता है, आध्यात्मिक रूप से कल्पना और सामने लाया गया है; लेकिन यह कथन कि मनुष्य की कल्पना की जाती है और आध्यात्मिक और भौतिक दोनों रूप से विकसित होता है, या भगवान और मनुष्य दोनों द्वारा, इस शाश्वत सत्य का खंडन करता है। युगों की सारी आपाधापी इन दोनों विरोधाभासों को कभी

सच नहीं बना सकती। दिव्य विज्ञान इस भ्रम की जड़ पर कुल्हाड़ी मारता है कि जीवन, या मन, भौतिक शरीर में है या उससे बनता है, और विज्ञान अंततः इस भ्रम को सभी त्रुटि के आत्म-विनाश और विज्ञान के जीवन की समझदार समझ के माध्यम से नष्ट कर देगा।

10. 68 : 27-16

क्रिश्चियन साइंस अभियोग प्रस्तुत करता है, अभिवृद्धि नहीं; यह अणु से मन तक कोई भौतिक विकास नहीं दर्शाता है, लेकिन मनुष्य और ब्रह्मांड के लिए दिव्य मन का एक संस्कार है। मानव पीढ़ी के रूप में आनुपातिक रूप से बंद हो जाता है, शाश्वत के सामंजस्यपूर्ण लिंक, आध्यात्मिक रूप से विवेकी होंगे; और मनुष्य, पृथ्वी के पृथ्वी पर नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ सह-अस्तित्व में दिखाई देगा। मनुष्य और ब्रह्मांड का वैज्ञानिक तथ्य आत्मा से विकसित होता है, और इसलिए आध्यात्मिक हैं, जैसा कि दिव्य विज्ञान में तय किया गया है, इस बात का प्रमाण है कि मनुष्य केवल स्वास्थ्य की भावना प्राप्त करते हैं क्योंकि वे पाप और बीमारी की भावना को खो देते हैं। मनुष्य कभी भी यह नहीं मान सकता कि मनुष्य एक निर्माता है। पहले से ही बनाए गए भगवान के बच्चों को पहचान लिया जाएगा क्योंकि मनुष्य होने का सत्य पाता है। इस प्रकार यह है कि असली, आदर्श आदमी अनुपात में प्रकट होता है क्योंकि झूठ और सामग्री गायब हो जाती है। अब शादी करने या "विवाह में दिए जाने" के लिए न तो मनुष्य की निरंतरता को बंद करता है और न ही भगवान की अनंत योजना में बढ़ती संख्या की उसकी भावना। आध्यात्मिक रूप से यह समझने के लिए कि एक रचनाकार है, ईश्वर, सारी सृष्टि को उजागर करता है, शास्त्रों की पुष्टि करता है, बिना किसी पक्षपात के, बिना किसी पीड़ा के, और मनुष्य की मृत्यु और सही और शाश्वत का मधुर आश्वासन लाता है।

11. 502 : 27-5

रचनात्मक सिद्धांत - जीवन, सत्य और प्रेम - ईश्वर है। ब्रह्मांड ईश्वर को दर्शाता है। लेकिन एक रचनाकार और एक रचना है। इस रचना में आध्यात्मिक विचारों और उनकी पहचानों का खुलासा होता है, जो अनंत मन में समाहित हैं और हमेशा के लिए परिलक्षित होते हैं। ये विचार अनंत से लेकर अनंत तक हैं, और उच्चतम विचार ईश्वर के पुत्र और पुत्रियाँ हैं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वानी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6